संपादकीय

परीक्षा की घड़ी

ऐसे वक्त में जब नीट परीक्षा प्रश्नपत्र लीक होने से उपजे छात्र आक्रोश से देश हाल ही में दो-चार हुआ है, देश के परीक्षा सिस्टम पर प्रतिभागियों का भरोसा कायम करना अपरिहार्य शर्त है। हाल के वर्षों में केंद्रीय स्तर और राज्यों में विभिन्न परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होने, परीक्षाएं स्थगित होने और परीक्षा परिणामों को लेकर किंतु-परंतु होने की खबरें अक्सर सामने आती रहती हैं। झारखंड लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अनियमितताओं को लेकर छात्रों का आंदोलन बदस्तूर जारी है। ऐसे में विश्वसनीयता के सवालों से जूझ रही नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए का इंटेलिजेंस, कानून लागू करने वाली एजेंसियों तथा डिफेंस फोर्सेज के अनुभवी लोगों को अपने परीक्षा सुरक्षा कमांड सेंटर में शामिल करने का निर्णय एक स्वागत योग्य कदम है। ये प्रयास दूसरी ओर हमें यह भी बताते हैं कि देश में महत्वपूर्ण प्रवेश परीक्षाएं कितनी संवेदनशील व असुरक्षित हो गई हैं। नए प्रावधानों के अनुसार इसके टेस्ट सिक्योरिटी और लाइव ऑपरेशन्स अनुभाग के प्रस्तावित जनरल मैनेजर परीक्षा प्रक्रिया के लगभग हर संवेदनशील हिस्से की देखरेख करेंगे, जिसके अंतर्गत प्रश्नपत्र तैयार करने, एन्क्रिप्शन से लेकर ट्रांसपोर्टेशन, स्टोरेज, वितरण और रियल-टाइम मॉनिटरिंग भी शामिल रहेगा। विश्वास किया जाना चाहिए कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन, सीसीटीवी निगरानी और परीक्षा के उपरांत डेटा एनालिसिस से परीक्षा व्यवस्था के पारदर्शी व विश्वसनीय होने की उम्मीद की जा सकती है। निस्संदेह, नीट प्रवेश परीक्षा विवाद के उपरांत प्रतिभागियों में भरोसा कायम करने की दिशा में यह एक गंभीर कोशिश होती नजर आती है। लेकिन एक बात तो तय है कि सिर्फ तकनीक के जरिए सिस्टम की खामियां दूर नहीं की जा सकतीं। हालिया नीट-यूजी पेपर लीक प्रकरण में सीबीआई की जांच में एनटीए के अपने ही गोपनीय विभाग में खामियां पाई गई थीं, मसलन संतोषजनक ढंग से तलाशी न लेना, सीसीटीवी की अपर्याप्त निगरानी, जिम्मेदारियों का सही बंटवारा न होना तथा अंतिम प्रश्न सेट तक बहुत अधिक लोगों की पहुंच होना, जिसने परीक्षा प्रश्नपत्र के लीक संकट को जन्म दिया। दरअसल, सीबीआई जांच में यह तथ्य भी सामने आया है कि परीक्षा प्रश्नपत्र तैयार करने वाले विशेषज्ञ एक-दूसरे के संपर्क में थे, जिससे परीक्षा की गोपनीयता की सुरक्षा का एक बुनियादी नियम भंग हो गया। वास्तव में, नियमानुसार किसी भी एक व्यक्ति की पहुंच पेपर के सभी फाइनल सेट तक नहीं होनी चाहिए। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि इस कथित गड़बड़ी के लिए किसी हाई-लेवल हैकिंग की जरूरत नहीं पड़ने दी गई। दरअसल, भ्रष्ट लोगों ने परीक्षा प्रक्रिया की मामूली खामियों का फायदा चालाकी से उठाया। निस्संदेह, यह बात किसी भी साइबर खतरे के मुकाबले नीति बनाने वालों के लिए चिंता की बात होनी चाहिए। इसमें दो राय नहीं कि दो सप्ताह पूर्व ही धर्मेंद्र प्रधान की जगह शिक्षा मंत्री बने प्रह्लाद जोशी के कंधों पर एक मजबूत, पारदर्शी और भरोसेमंद परीक्षा सिस्टम बनाने की बड़ी जिम्मेदारी है। उन्हें विषय की संवेदनशीलता को समझते हुए तुरंत विश्वास बहाली के लिए काम आरंभ करना होगा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि न केवल छात्र, बल्कि उनके अभिभावक व सारा देश फिर से निराश न हो सके।

इथेनॉल : भारत की ऊर्जा सुरक्षा और आगे

सोशल मीडिया और कुछ अनुभवों के कारण, कुछ लोगों को यह लगने लगा है कि ई-20 पेट्रोल की जबरदस्ती बिक्री सही नहीं है। बाजार में विभिन्न प्रकार के विकल्प होने में कोई हर्ज भी नहीं है। लेकिन सरकार का मानना है कि इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल के कारण कई फायदे हैं, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। पहला फायदा यह है कि इससे ऊर्जा में आत्मनिर्भरता बढ़ती है। तेल की उपलब्धता कम होने पर भी दशीय संसाधनों का उपयोग कर पेट्रोल उपलब्ध कराया जा सकता है। इसके साथ ई-20 पेट्रोल के इस्तेमाल से बहुमूल्य विदेशी मुद्रा भी बचती है। दूसरा फायदा यह है कि इथेनॉल का इस्तेमाल होने से इसका लाभ किसान को मिलता है, क्योंकि इससे उनको अपनी उपज का सही मूल्य मिलता है।

नीट परीक्षा लीक के बाद आज मीडिया में सबसे बड़ा मुद्दा ई-20 यानी इथेनॉल ब्लैंडिंग पेट्रोल बना हुआ है। सरकार को इस बात पर घेरा जा रहा है कि वो लोगों पर इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल थोप रही है, जिससे उनकी माईलेज भी घट रही है और गाड़ियों के इंजन भी खराब हो रहे हैं। भारत में इथेनॉल ब्लैंडिंग का सफर 2001 में शुरू हुआ। इससे पहले, गहन चर्चा हो रही थी कि भारत अपने जैव संसाधनों का इस्तेमाल करके भले ही पूरी तरह से नहीं, तो कम से कम आंशिक रूप से, ऊर्जा सुरक्षा कैसे हासिल कर सकता है। इसमें सिर्फ इथेनॉल ही नहीं, बल्कि बंजर भूमि पर उगाए जाने वाले जेट्रोफा, पोंगामिया (करंज) जैसी फसलों से बनने वाले दूसरे बायो-ईंधन भी शामिल थे, जिनका इस्तेमाल विकल्प के तौर पर किया जा सकता था। हालांकि, इन बायो-ईंधन का कुछ हद तक इस्तेमाल 2001 से पहले ही शुरू हो गया था, लेकिन पेट्रोल में इथेनॉल ब्लैंडिंग की पहली आधिकारिक घोषणा तत्कालीन पेट्रोलियम मंत्री राम नाइक द्वारा 2001 में स्वदेशी जागरण मंच के थिंक टैंक सीबीएमडी द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में की गई थी। यह कहा गया कि इससे आयातित कच्चे तेल पर निर्भरता कम करने में मदद मिलेगी और सफल पायलट प्रोजेक्ट के बाद कीमती विदेशी मुद्रा की भारी बचत होगी।

तत्कालीन यूपीए सरकार के कार्यकाल में 2006 में पेट्रोल में 5 प्रतिशत इथेनॉल मिश्रण (ई-5) का कार्यक्रम 20 राज्यों और 4 केंद्रशासित प्रदेशों तक विस्तारित किया गया। इसका अर्थ यह नहीं था कि इथेनॉल मिश्रण की अधिकतम सीमा 5 प्रतिशत पर स्थायी रूप से तय कर दी गई थी। यह कई सालों तक ऐसे ही चलता रहा, जब तक कि इस ब्लेंडिंग में इथेनॉल का अनुपात बढ़ाने का फैसला नहीं किया गया। भारत में पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण की यात्रा धीरे-धीरे आगे बढ़ी। शुरुआती दौर में 5 प्रतिशत मिश्रण का लक्ष्य रखा गया। 2018 में 10 प्रतिशत ब्लैंडिंग का लक्ष्य 2022 तक हासिल करने का निर्धारण किया गया, जिसे सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियों ने जून 2022 में निर्धारित समय से पांच महीने पहले ही प्राप्त कर लिया। इसके बाद यह ब्लैंडिंग बढ़कर 2022-23 में 12.06 प्रतिशत और 2023-24 में 14.60 प्रतिशत हो गई। 2024-25 में यह लगभग 19 प्रतिशत तक पहुंच गई। अंतत: 2025-26 में भारत ने 20 प्रतिशत इथेनॉल ब्लैंडिंग का लक्ष्य हासिल कर लिया, मूल 2030 के लक्ष्य से पांच वर्ष पहले। शायद इथेनॉल ब्लेंडिंग का अनुपात जल्दी से 20 प्रतिशत तक बढ़ाने की मुख्य वजह कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी और अमरीका-ईरान युद्ध तथा उसके बाद होर्मुज जलडमरूमध्य की नाकेबंदी के कारण सप्लाई में रुकावट थी।

कार्बन उत्सर्जन : 2001 में जब पहली बार इथेनॉल ब्लैंडिंग के बारे में सोचा गया था, तो मुख्य जोर ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भरता पर था, कार्बन उत्सर्जन कम करने पर उतना जोर नहीं था। लेकिन, नीति निर्माताओं के मन में यह बात

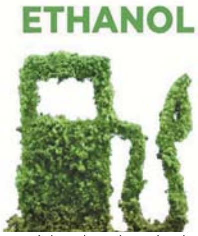

जरूर थी कि इथेनॉल ब्लैंडिंग से पेट्रोलियम उत्पादों के कारण होने वाले कार्बन उत्सर्जन को कम करने में भी मदद मिल सकती है। लेकिन, जैसे-जैसे समय बीतता गया, ग्लोबल वार्मिंग और कार्बन उत्सर्जन को लेकर चिंता बढ़ती गई। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में लगातार बढ़ता तापमान निश्चित रूप से जीवाश्म ईंधन को जलाने और दूसरी औद्योगिक गतिविधियों से जुड़ा है। हाल के समय में, पर्यावरण और ग्लोबल वार्मिंग को ध्यान में रखते हुए जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल कम करने के लिए कई कोशिशें हुई हैं। जानकारों का मानना है कि इथेनॉल ब्लेंडिंग के कारण भी जीवश्म ईंधन का उपयोग कम होगा और इसे कार्बन उत्सर्जन भी घटेगा। हाल ही में, सरकार के पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल मिलाकर बेचने के फैसले पर काफी विवाद हुआ है। सबसे पहले, सरकार पर आरोप लग रहा है कि वह बिना ठीक से जांच-पड़ताल किए मिलावटी पेट्रोल इस्तेमाल करने के लिए मजबूर कर रही है जिससे वाहनों को नुकसान पहुंच रहा है और आम जनता के वाहन खराब होने का खतरा बढ़ रहा है। एक और आपत्ति यह है कि चूंकि इथेनॉल एक सस्ता घटक है और इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल बनाने की लागत कम आती है, फिर भी सरकार कंपनियों से यह नहीं कह रही है कि वे इसका फायदा ग्राहकों तक पहुंचाएं। इथेनॉल मिलाने के खिलाफ तीसरी आपत्ति यह है कि इससे गाड़ियों का माइलेज कम हो जाता है, हालांकि अधिकारी मानते हैं कि माइलेज 2 से 6 प्रतिशत तक कम हो सकता है, लेकिन आलोचकों का मानना है कि माइलेज में कम से कम 10 से 15 प्रतिशत की कमी आती है।

अंतरराष्ट्रीय अनुभव : अंतरराष्ट्रीय अनुभव से पता चलता है कि कई देश पहले से ही इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिनमें ब्राजील जैसे पेट्रोलियम भंडार वाले देश भी शामिल हैं। ब्राजील में लंबे समय से अलग-अलग तरह के इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल का इस्तेमाल हो रहा है। ब्राजील ने गाड़ियों में जरूरी बदलाव करके 100 प्रतिशत इथेनॉल वाले ईंधन की भी शुरुआत की है। आलोचकों का तर्क है कि पहले बनी भारतीय गाड़ियां इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल के इस्तेमाल के लिए उपयुक्त नहीं हैं, और इसलिए 20 प्रतिशत इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल से गाड़ियों को नुकसान पहुंचेगा। ई-20 को लेकर मुख्य चिंता पुराने पेट्रोल वाहनों की तकनीकी उपयुक्तता को लेकर है। 2008 के बाद के अधिकांश वाहन ई-10 के अनुरूप ही बनाए गए थे, जबकि ई-20 के लिए मटीरियल उपयुक्तता और इंजन कैलिब्रेशन की आवश्यकताएं अधिक हैं। इसलिए पुराने वाहनों में ई-20 से ईंधन क्षमता में कुछ कमी तथा लंबे समय में कुछ ईंधन से जुड़े कलपुर्जों पर अतिरिक्त प्रभाव की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। हालांकि, उपलब्ध तकनीकी परीक्षणों से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि ई-20 सामान्य रूप से पुराने वाहनों को व्यापक या तत्काल नुकसान पहुंचाता है। नए वाहनों को ई-20 के अनुरूप बनाना इस संक्रमण का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

प्रश्न कीमत का : आलोचकों का कहना है कि चूंकि ई-20 पेट्रोल लागू करने का मूल तर्क इथेनॉल के सस्ते दाम पर उपलब्ध होना है तो सरकार को सस्ते इथेनॉल का लाभ उपभोक्ताओं को भी देना चाहिए। लेकिन सरकार ने एक तरफ शुद्ध पेट्रोल की उपलब्धता समाप्त कर दी और सभी को इथेनॉल ब्लैंडिड पेट्रोल को उसी कीमत पर खरीदने के लिए अब बाध्य कर रही है। आलोचकों का यह भी कहना है कि चूंकि ई-20 पेट्रोल से माईलेज भी कम हो जाती है, उसकी भरपाई भी ई-20 पेट्रोल को सस्ता कर की जा सकती है। पेट्रोल में इथेनॉल ब्लैंडिंग का अनुपात बढ़ने के कारण अब इथेनॉल की कीमत भी बढने लगी है। अब तो यह भी कहा जा रहा है कि वो कच्चे तेल की कीमत से भी ज्यादा हो गई है। इसलिए इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल की कीमत घटाने की संभावना तो नहीं लगती।

इस विवाद का क्या है समाधान : सोशल मीडिया और कुछ अनुभवों के कारण, कुछ लोगों को यह लगने लगा है कि ई-20 पेट्रोल की जबरदस्ती बिक्री सही नहीं है। बाजार में विभिन्न प्रकार के विकल्प होने में कोई हर्ज भी नहीं है। लेकिन सरकार का मानना है कि इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल के कारण कई फायदे हैं, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। पहला फायदा यह है कि इससे ऊर्जा में आत्मनिर्भरता बढ़ती है। तेल की उपलब्धता कम होने पर भी दशीय संसाधनों का उपयोग कर पेट्रोल उपलब्ध कराया जा सकता है। इसके साथ ई-20 पेट्रोल के इस्तेमाल से बहुमूल्य विदेशी मुद्रा भी बचती है। दूसरा फायदा यह है कि इथेनॉल का इस्तेमाल होने से इसका लाभ किसान को मिलता है, क्योंकि इससे उनको अपनी उपज का सही मूल्य मिलता है।

-डा. अश्वनी महाजन

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

जो भक्ति के रंग में रंग जाते हैं भगवान स्वयं उनसे मिलने आते हैं

जीवन समाधान

महाराज वैभव भटेले
(धर्म, अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No. 9303139229

सदपुरुषों के श्रीमुख से ऐसा अक्सर सुनने में आता है। हम इस जगत में पैसा कमाने नहीं बल्कि परमात्मा को पाने आए हैं। पैसा और धन सम्पदा भले ही हमारे जीवन की जरूरत है लेकिन ये साध्य नहीं सिर्फ साधन है। चाहे हम कितना ही धन सम्पदा इकट्ठा कर लें करोड़ों रुपयों से तिजोरी भर लें। लेकिन सुबह सवेरे उठकर स्नान ध्यान के साथ पूजन परमात्मा का ही करते हैं। चाहे स्त्री हो संतति हो या सम्पत्ति इन सबसे विरक्ति का भाव उत्पन्न होता है। लेकिन भगवान से दूर हो जाने का मन कभी नहीं होता। सभी चाहते हैं एक बार भगवान के दर्शन हो जाएं। पुण्यात्मा तो छोड़ो पापियों के मन में भी भगवद प्राप्ति के भाव यदा कदा उत्पन्न होते रहते हैं। अब कोई पूछे कि भगवान से मिलने का सबसे अच्छा माध्यम क्या है? तो शास्त्र पुराण से लेकर सद्गुरु तक सभी ने भक्ति को ही भगवद प्राप्ति का श्रेष्ठतम उपाय बताया है। भक्ति के लिए पहली प्राथमिकता शनैः शनैः संसार से विरक्ति और भगवान में आसक्ति। जब ऐसा भाव विस्तार लेता है तब हमारे अंदर का बालक ध्रुव राजप्रासाद को छोड़कर लौकिक पिता की गोद से उतरकर परमपिता की गोद में बैठने को आतुर हो जाता है। उस बियावान जंगल की ओर चल पड़ता है जो कंकर काटों हिंसक पशुओं और विषैले सर्पों से भरा है। लेकिन ध्रुव संकल्प जब भगवद प्राप्ति का हो तब राह में सद्गुरु मिल जाते हैं जो सिद्ध मंत्र देते हैं। सनमार्ग दिखाते हैं और भक्ति का भाव समझाते हैं। ध्रुव जी को सद्गुरु के रूप में नारदजी मिल गये जिन्होंने मंत्र दिया और मधुबन की राह दिखाई। जहां बालक ध्रुव ने अटूट भक्ति के लिए अपनी आसन जमाई। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर वो शंख चक्र गदा पदमधारी भगवान विष्णु ने उनपर दया दिखाई। शास्त्रकारो ने तो लिखा बालक ध्रुव के दर्शन करने स्वयं भगवान आए। इससे भक्ति मार्गियों में यह विश्वास पनपा — जो भक्ति के रंग में रंग जाते हैं, भगवान स्वयं उनसे मिलने आते हैं! इससे यह सिद्धांत भी दृढ़ होता है कि भगवान को कहीं खोजने की अवश्यकता नहीं। वह निराकार रूप से हमारे हृदय में होते हैं और जब भक्ति प्रबल होती है तो साकार रूप रचकर हमारे सामने खड़े होते हैं। ध्रुव की तरह शबरी से मिलने भी प्रभुश्रीराम स्वयं आए। उधर विदुरजी की कुटिया में आकर तो भगवान श्रीकृष्ण ने भाजी के भोग लगाए। इसलिए संसार में रहकर भी इससे विरक्ति का भाव जगाएं। भगवद प्राप्ति का उद्देश्य बनाएं और भगवान की भक्ति में डूब जाएं।

सच वाणी

सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं।
दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।

आस्था का खजाना और मन्नत के ताले-नाथेश्वर महादेव मंदिर

सनातन धर्म में श्रावण मास भगवान शिव की आराधना के लिए सबसे पावन, पुण्यदायी और श्रेष्ठ माना जाता है। यही कारण है कि श्रावण मास प्रारंभ होते ही गांव, कस्बों और नगरों में स्थापित शिव मंदिरों में पूजा-अर्चना और अनुष्ठान करने वालों की भारी भीड़ एकत्र होने लगती है। अधिकांश मंदिर भगवान शंकर के विभिन्न रूपों के अनुरूप विख्यात और मान्यता प्राप्त हैं, जहां लोग अपनी आस्था प्रकट करने और समस्याओं से निजात पाने के लिए जाते हैं।

सामान्य रूप से श्रद्धालु भगवान शिव को जल, अक्षत? (चावल), पुष्प, बेलपत्र, भांग, धतूरा और दूध अर्पित कर पूजा करते हैं। तमाम श्रद्धालु इसी माह में अनुष्ठान के रूप में रुद्राभिषेक अथवा 'ऊं नमः शिवाय' का जाप भी करवाते हैं।

प्रयागराज में स्थापित एक प्राचीन शिव मंदिर में पूजन और विविध प्रकार के अनुष्ठान के अतिरिक्त एक परंपरा सदियों से चली आ रही है, जिसके अंतर्गत लोग मंदिर में अपनी मन्नत पूरी होने की कामना के लिए ताले लगाते हैं और जब उनकी मन्नत पूरी हो जाती है तो आकर उन्हें खोल देते हैं। ताले लगाने की इस अनूठी परंपरा के कारण अब यह मंदिर 'ताले वाले शिव मंदिर' के रूप में विख्यात है।

नाथ संप्रदाय द्वारा स्थापित प्राचीन मंदिर

प्रयागराज के जिस शिव मंदिर में ताले लगाने की परंपरा है, उसका वास्तविक नाम नाथेश्वर महादेव मंदिर है। मंदिर के गर्भगृह में मुख्य रूप से भगवान शिव का एक छोटा-सा प्राचीन शिवलिंग विराजमान है। यह मंदिर नगर के सबसे प्राचीन मोहल्लों में से एक मुट्ठीगंज में स्थित है, जो व्यापारिक प्रतिष्ठानों का क्षेत्र है। यह मंदिर लगभग 500 वर्ष पुराना बताया जाता है। मंदिर की प्राचीनता को लेकर अलग-अलग दावे किए जाते हैं। तमाम श्रद्धालुओं की मान्यता है कि यह शिव मंदिर वैदिक काल में नाथ संप्रदाय द्वारा देशभर में स्थापित किए गए कुछ प्रमुख शिव मंदिरों में से एक है, जिसके कारण इसका नाम नाथेश्वर मंदिर पड़ा।मंदिर के पुजारी कहते हैं कि मंदिर के गर्भगृह की स्थापना की प्राचीनता को लेकर कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यहां आने वाले तमाम श्रद्धालु बताते हैं कि उनके दादा और परदादा भी यहां पूजन करने आते रहे हैं। मंदिर से जुड़े लोग कहते हैं कि मंदिर का गर्भगृह अति प्राचीन काल से स्थापित है, लेकिन मंदिर का निर्माण संभवतः मुगल काल में किया गया था, क्योंकि मंदिर की दीवारों पर अरबी-फारसी भाषा में कुछ पंक्तियां लिखी हुई हैं।

मन्नत के लिए ताले की परंपरा

मंदिर में ताले लगाने की परंपरा कब शुरू हुई, यह कहीं लिपिबद्ध नहीं है। मंदिर के महंत बताते हैं कि नेपाल के काठमांडू में स्थित विश्वविख्यात शिव मंदिर में पूजा-अर्चना के दौरान भगवान शिव के आदेश पर पहला ताला लगाया गया था। उसी के बाद मनोकामना पूर्ण होने की कामना के लिए ताले लगाने की परंपरा शुरू हो गई। अब यह परंपरा लगातार बढ़ती जा रही है। देश के अन्य मंदिरों में भी ताले लगाने की परंपरा शुरू हो गई है।

आज इस मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने शिक्षा, नौकरी, विवाह, संतान सुख, व्यापार में उन्नति, कर्ज से छुटकारा और मानसिक शांति जैसी मनोकामनाओं के पूर्ण होने की कामना में ताले लगा रखे हैं। अधिकांश श्रद्धालु ताले की चाबी अपने साथ ले जाते हैं, लेकिन कुछ लोग अपने ताले के साथ चाबी भी वहीं छोड़ जाते हैं। अपने ताले की पहचान के लिए लोग उन पर अपना नाम और नंबर गुदवाकर लाते हैं। मंदिर के महंत बताते हैं कि ताले लगाने के लिए कोई तिथि या मुहूर्त निर्धारित नहीं है। जब श्रद्धालुओं की आस्था जागृत होती है, वे ताला लगा देते हैं। हालांकि, अधिकांश लोग श्रावण मास में, विशेषकर सोमवार को, ताले लगाते हैं।आज इस मंदिर के बाहर बड़ी संख्या में ताले लगे हुए हैं। मंदिर व्यवस्था से जुड़े लोग बताते हैं कि अनुमानतः करीब 30 हजार ताले लगे होंगे। इन तालों की संख्या समय के साथ घटती-बढ़ती रहती है, क्योंकि मन्नत पूरी होने पर श्रद्धालु भगवान शिव की पूजा-अर्चना और अनुष्ठान के बाद अपना ताला खोलकर ले जाते हैं। ताला खोलने के लिए रविवार और मंगलवार का दिन शुभ माना जाता है।

आस्था और सुरक्षा चिंता

मंदिर के बाहर लगी रेलिंग पर बड़ी संख्या में ताले लगे हैं, लेकिन वह अब जर्जर हो गई है और कभी भी टूट सकती है। आसन्न खतरे को देखते हुए मंदिर प्रबंधन अब उसकी मरम्मत कराना चाहता है, लेकिन तालों के कारण आस्था आड़े आ रही है। ऐसे में अब मंदिर ट्रस्ट के लोग श्रद्धालुओं से अपील कर रहे हैं कि वे अपने ताले खोलकर उन्हें अन्यत्र लगा दें। मंदिर में प्रतिदिन बड़ी संख्या में स्थानीय श्रद्धालु पूजा-अर्चना अथवा अनुष्ठान के साथ-साथ भंडारे के लिए आते हैं, लेकिन श्रावण मास में यह संख्या कई गुना बढ़ जाती है। आसपास के शहरों के अतिरिक्त यहां सीमावर्ती राज्यों से भी लोग अपनी मन्नत लेकर आते हैं।

गर्भगृह में समा जाता जल

मंदिर में जल निकासी की कोई अलग व्यवस्था नहीं है, लेकिन प्रतिदिन बड़ी मात्रा में जल, दूध, गंगाजल, मधु आदि चढ़ाए जाते हैं और वह सब रहस्यमय ढंग से गर्भगृह में समा जाता है। श्रावण मास में तो इसकी मात्रा हजारों लीटर तक पहुंच जाती है, लेकिन वह सब गर्भगृह में चला जाता है। वह कहां जाता है, यह अब तक किसी को पता नहीं है।

वर्ग पहेली 2943

बायें से दायें:- 2) नेकचलनी; सद्व्यवहार, 4) रोगी, 5) नमकीनपन, 7) उबला चावल, 8) पृथ्वी, 10) वाद्य, 12) नदी, 14) लालसा, 16) बगीचे (विशेष कर बाग के), 17) दैवी संकेत, 19) ईद के दिन नमाज पढ़ने का स्थान, 23) माला, 24) चमकदमक, 28) एक दिशा, 29) सरल; सुलभ, 30) छिपकर बुरी नियत से देखने की क्रिया.

ऊपर से नीचे:- 1) शिक्षार्जन, 2) एक पौधा जिसके रेशे से बोरे बनते हैं, 3) आवरण, 4) इज्जत, 6) एक दिशा, 9) लाड़ला, 11) सूर्योदय देश, 13) नष्ट, 15) दम; फूंक; चाबुक, 18) बेडौल; बदसूरत; सौंदर्यहीन, 20) गिरोह, 21) कोचवान, 22) शेष, 24) विशालता, 25) योग्य, 26) गायका; बानगी, 27) प्रार्थना.

(उत्तर: अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

सचएक्सप्रेस पंचांग

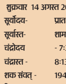

ज्योतिषाचार्य श्रीमती सुषमा शंकरलाल पुरोहित
मो: 8823008303

शुक्रवार 14 अगस्त 2026
सूर्योदय- प्रातः 5:53 बजे
सूर्यास्त- शाम 6:47 बजे
चंद्रोदय - 7:30
चंद्रास्त - 8:13
शक संवत् - 1948 पराभव
विक्रम संवत - 2083 रौद्र
पूर्णिमांत महीना- श्रावण
पक्ष - शुक्ल
तिथि - दूज रात्रि 8:16 तक पश्चात् तृतीया
नक्षत्र - मघा प्रातः 6:45 तक पश्चात् पूर्वा फाल्गुनी
योग - परिघ सुबह 9:32 तक पश्चात् शिव
करण - बालव सुबह 7:44 तक पश्चात् कौलव
सूर्य राशि - कर्क
चंद्र राशि - सिंह
शुभांक 1-2-3

मेष

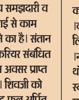

दिन अनुकूल। समय समझदारी व चतुराई से काम करने का है। संतान के कैरियर संबंधित उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। शिवजी को सफेद फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 3, शुभ रंग - लाल।

वृष

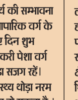

परिवार में मांगलिक कार्य की सम्भावना।व्यापारिक वर्ग के लिए दिन शुभ।नौकरी पेशा वर्ग थोड़ा सजग रहें। स्वास्थ्य थोड़ा नरम गरम हो सकता है। शिवजी को अबीर अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग - लाल।

मिथुन

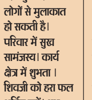

दिन शुभ। प्रतिष्ठित लोगों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में सुख सामंजस्य। कार्य क्षेत्र में शुभता। शिवजी को हरा फल अर्पित करें। शुभ अंक - 7, शुभ रंग- हरा।

कर्क

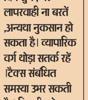

दिन शुभ, पर लापरवाही ना बरतें ,अन्यथा नुकसान हो सकता है। व्यापारिक वर्ग थोड़ा सतर्क रहें।टैक्स संबंधित समस्या उभर सकती है। शिवजी को मखाने अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग- केसरी।

सिंह

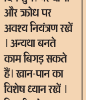

दिन शुभ। पर वाणी और क्रोध पर अवश्य नियंत्रण रखें। अन्यथा बनते काम बिगड़ सकते हैं। खान-पान का विशेष ध्यान रखें। शिवजी को लाल फल अर्पित करें। शुभ अंक- 4, शुभ रंग- सफेद।

कन्या

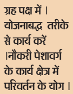

दिन उत्तम।गोचर ग्रह पक्ष में। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करें।नौकरी पेशावर्ग के कार्य क्षेत्र में परिवर्तन के योग। शिवजी को बेलफल अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग- आसमानी।

तुला

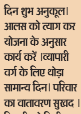

दिन शुभ अनुकूल। आलस को त्याग कर योजना के अनुसार कार्य करें।व्यापारी वर्ग के लिए थोड़ा सामान्य दिन। परिवार का वातावरण सुखद। शिवजी को मिश्री अर्पित करें। शुभ अंक - 9, शुभ रंग- गुलाबी।

वृश्चिक

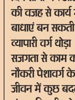

दिन सामान्य। आलस की वजह से कार्य में बाधाएं बन सकती है। व्यापारी वर्ग थोड़ा सजगता से काम करें। नौकरी पेशावर्ग के जीवन में कुछ बदलाव संभव। शिवजी को लाल गुलाब अर्पित करें। शुभ अंक- 8, शुभ रंग- लाल।

धनु

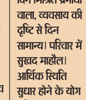

दिन मिश्रित प्रभावों वाला, व्यवसाय की दृष्टि से दिन सामान्य। परिवार में सुखद माहौल। आर्थिक स्थिति सुधार होने के योग। शिवजी को पीले फल अर्पित करें। शुभ अंक- 1, शुभ रंग- हल्का नीला।

मकर

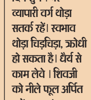

दिन शुभ। पर व्यापारी वर्ग थोड़ा सतर्क रहें। स्वभाव थोड़ा चिड़चिड़ा, क्रोधी हो सकता है। धैर्य से काम लेवे। शिवजी को नीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 3, शुभ रंग - हरा।

कुंभ

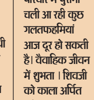

परिवार में पुरानी चली आ रही कुछ गलतफहमियां आज दूर हो सकती है। वैवाहिक जीवन में शुभता। शिवजी को काला अर्पित करें। शुभ रंग- 1, शुभ रंग- नीला।

मीन

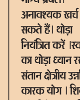

भाग्य प्रबल। अनावश्यक खर्च हो सकते हैं। थोड़ा नियंत्रित करें।स्वास्थ्य का थोड़ा ध्यान रखें। संतान क्षेत्रीय उन्नति कारक योग। शिव जी को पीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग - पीला।

ग्रह स्थिति

ग्रह स्थिति: सूर्य- कर्क राशि में, ता. 17 की रात्रि 10:39 से सिंह राशि में। मंगल- वृष राशि में, ता. 2 की रात्रि 9:09 से मिथुन राशि में। बुध- मिथुन राशि में, ता. 5 की रात्रि 7:10 से कर्क राशि मे, ता. 22 की रात्रि 7:37 से सिंह राशि में। गुरु- कर्क राशि में। शुक्र- सिंह राशि में, ता.1 की प्रातः 5:58 से कन्या राशि में। शनि- मीन राशि मे वक्री। राहु- कुंभ राशि में। केतु- सिंह राशि में।

दिशा शूल

पश्चिम दिशा में यात्रा वर्जित है। अति आवश्यक होने पर जौ से बने खाद्य पदार्थ का सेवन कर घर से निकलें।

चौघड़िया

चर सुबह 6:00-7:30 तक
लाभ सुबह 7:30-9:00 तक
अमृत सुबह 9:00-10:30 तक
शुभ दिन 12:00-1:30 तक
चर अपराह्न 4:30-6:00 तक

अभिजीत मुहूर्त

सुबह 11:47 से दिन 12:27 तक!

सर्वार्थ सिद्धि योग

सर्वार्थ सिद्धि योगः ता. 2 को रात्रि 8:41से रात्रि अंत तक। ता.8 को सूर्योदय से दिन 10:59 तक। ता. 16 को सूर्योदय से शाम 6:50 तक। ता. 20 के दिन 11:04 से ता. 21 के दिन 1:20 तक। ता. 23 को सूर्योदय से शाम 6:28 तक। ता.30 को सूर्योदय से रात्रि अंत तक।

पुष्य नक्षत्रः ता. 11 को सुबह 10:09 से ता. 12 की सुबह 8:45 तक।

त्रिपुष्कर योग - ता. 29 को सुबह 9:20 से रात्रि अंत तक।

रवि योग

रवियोगः ता.4 की रात्रि 9:58 से ता. 5 की रात्रि 9:22 तक। ता. 15 की देर रात्रि से ता. 16 की देर रात्रि तक। ता. 17 की देर रात्रि से सुबह 8:02 तक। ता. 18 की देर रात्रि से ता.19 की प्रातः 6:51 तक। ता. 21 के दिन 11:57 से ता . 23 की शाम 5:49 तक। ता. 25 की रात्रि 10:56 से ता. 26 की रात्रि 12:52 तक।

अमृत सिद्धि योगः ता. 8 को सूर्योदय से दिन 10:59 तक। ता .16 को प्रातः 6:17 से शाम 6:50 तक।

द्विपुष्कर योगः ता. 9 को सुबह 8:29 से दिन 1:23 तक।